



नामांकन जारी समय : 2022-2023

उषा कॉलेज ऑफ फार्मसी

D.C ऑफिस के पीछे, बड़ा कांकड़ा, सहरायका

Regd. Under : Health Education & Family Welfare Department Govt. of Jharkhand

Recognized by : Pharmacy Council of India (PCI) Govt. of India

Affiliated by : Kothai University, Chabissa, Jharkhand.

Course:
B. PHARMA
(Bachelor in Pharmacy)

ट्रेड फ्रेण्ड्स
एनएस-33 (वकला ओरगाइडी)
BMW शोरूम के नजदीक, रांची
मो. : 9204951600

गोदा टाउन, कांकड़ा रोड,
रिलायंस मार्ट, रांची
मो. : 7360027795



समस्या है तो....
समाधान भी है



8210075897, 9031249105

विवाह, व्यापार, परिवार, करियर आदि उपर्युक्त विविध विषयों पर सम्बन्धित संपर्क करें।

प्राप्ति कार्यालय - कृष्णा जयन्तर सोनर गली, ऊपर वाजार, रांची

आवास- आचार्यकृतम् बहावीर नगर, अरगाड़ा, रांची

आजाद सिपाही

कलम कलम बढ़ाये जा



विधानसभा शीतकालीन सत्र का तीसरा दिन नियोजन और 1932 खतियान पर हंगामा



राज्य के नौजवान जो चाहेंगे, उसी रास्ते सरकार आगे बढ़ेगी: मुख्यमंत्री

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। नियोजन नीति मामले पर सदन में मध्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि सरकार का प्रयास है कि 3 और 4 ग्रेड में शत प्रतिशत नौकरी मूलस्वी, आदिवासी को मिले। अब पीछे मुड़ कर देखने से कुछ नहीं होगा। राज्य के सभा तीन करोड़ लोगों के प्रति हम लोग कमिटेद हैं। कई चीजें हो रही हैं, जो पहले नहीं हुई। उन्होंने कहा कि विषय के बारें जोहर या तार पर सवाल किये। विधायक भानुप्रताप शाही ने नियोजन नीति को लेकर सरकार पर हमला बोला। विधायक अनंत आद्या ने नियुक्तियों से संबंधित सवाल पूछे। भोजनावकाश के बाद सदन में अनुपूरक बजट के कटौती प्रस्तुत व पर सरकार के जवाब से अध्यक्ष रवींद्र नाथ महोत ने विषय को शांत कराया और फिर प्रश्नकाल को आगे बढ़ा। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

अंदेनकालियों का मुद्दा उठाया। वहाँ अमित मंडल ने सरकार की खतियानी जोहर या तार पर सवाल किये। विधायक भानुप्रताप शाही ने नियोजन नीति को लेकर सरकार पर हमला बोला। विधायक अनंत आद्या ने नियुक्तियों से संबंधित सवाल पूछे। भोजनावकाश के बाद सदन में अनुपूरक बजट के कटौती प्रस्तुत व पर सरकार के जवाब से अध्यक्ष रवींद्र नाथ महोत ने विषय को शांत कराया और फिर प्रश्नकाल को आगे बढ़ा। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले सदन के बाहर प्रस्तरन किया। इसके बाद सदन के अंदर भी विरोध जाते हुए शोर-शबाबा और हंगामा।

सदन की कार्यवाही शुरू होते ही आजपा विधायकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। उन्होंने नवी नियोजन नीति बानाने, सरकार पर युवाओं को उग्रने का आरोप लगाया। प्रश्नकाल को बाधित किया। हालांकि विधानसभा की कार्यवाही शुरू होने से

किसी के सामने अस्तित्व बचाने की चुनौती है, तो किसी को अपना जनाधार बढ़ाने की बेचैनी

2024 के लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा की नौ राज्यों में होगी परीक्षा

2024 के लोकसभा चुनाव के पहले 2023 में नौ राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। इसमें मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, तेलंगाना, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा और नागालैंड शामिल हैं। एक तरफ जहां भाजपा को मध्यप्रदेश और कर्नाटक में सत्ता बचाने की चुनौती है, वहां दूसरी तरफ राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में बीजेपी और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला होना है। कर्नाटक में जहां बीजेपी और कांग्रेस आरंभिक रूप से लोकसभा चुनाव में टीएसएस, कांग्रेस और बीजेपी के बीच त्रिकाणीय मुकाबला होना है। त्रिपुरा के लोकसभा चुनाव में जहां बीजेपी और कांग्रेस के बीच त्रिकाणीय मुकाबला होना है।

भाजपा दक्षिण में अपना विस्तार करने के लिए तेलंगाना में अपना पैर जमाना चाह रही है। पूर्वोत्तर में अपनी मजबूती बरकरार रखने के लिए भी भाजपा के लिए त्रिपुरा, मेघालय और मिजोरम में पार्टी की जीत महत्वपूर्ण है। इन राज्यों की सीटें 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा की चुनावी रणनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, लिहाजा पार्टी इन राज्यों में जीत के लिए अपनी पूरी ताकत

झाँकेगी। भाजपा ने 2022 में अपने लिए बड़े बदलाव के सकेत भी दिये हैं। इसी साल हैदराबाद में आयोजित राष्ट्रीय कार्यक्रमियों की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पार्टी का कार्यकर्ताओं को प्रसामाद मुसलमानों को अपने साथ जोड़ने के लिए विशिष्ट कार्यक्रम चलाने का निर्देश दिया। भाजपा यदि प्रसामाद मुसलमानों को अपने साथ जोड़ने में सफल रहती है, तो यह पार्टी के लिए

महत्वपूर्ण कदम भी साबित हो सकता है। जिस तरह 2014, 2019 के लोकसभा चुनावों और यूपी-गुजरात के विधानसभा चुनावों में भाजपा को मुस्लिम बहुल सीटों पर जीत मिली है, इससे ये संकेत मिले हैं कि अल्पसंख्यक समुदाय का एक तबका अब भाजपा के प्रति बदलाव की नजर से देख रहा है। यदि भाजपा का प्रसामाद कार्ड चाना तो देश की परंपरागत राजनीति में बड़ा बदलाव आना तय है। 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले होनेवाले विधानसभा चुनावों में भाजपा को समान क्या है चुनौती और उन राज्यों को भेदने की रणनीति पर प्रकाश डाल रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।



राकेश सिंह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की करिमाई जोड़ी ने 2014 से ही भाजपा के लिए लगातार नये कीर्तिमान गढ़े हैं। 2022 में भी पार्टी ने कई ऐसे बड़ी उत्तराखण्ड में इसके गठन के बाद से अब तक कोई पार्टी लगातार दूसरी बार सत्ता में आने में कामयाब नहीं रही थी। राज्य की इस परंपरा के भरोसे कांग्रेस ने हरीश रावत के नेतृत्व में भाजपा के साथ तंगी चुनौती पेश की।

उत्तराखण्ड में भी परचम
पहाड़ी राज्य उत्तराखण्ड में इसके गठन के बाद से अब तक कोई पार्टी लगातार दूसरी बार सत्ता में आने में कामयाब नहीं रही थी। राज्य की इस परंपरा के भरोसे कांग्रेस ने हरीश रावत के नेतृत्व में भाजपा के साथ तंगी चुनौती पेश की।

राज्य सरकार के शासन से अप्रसन्न

भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व

ने राज्य में लगातार तीन मुख्यमंत्री बदले। लेकिन तमाम चुनौतीयों से जुनैने के बाद भी बड़ी चुनौती साधित होने के लिए 2024 के साल में कामयाब ही और उसने मुख्यमंत्री पुक्कर को नियमित धार्मी के नेतृत्व में दुबारा सरकार बनाने में सफलता हासिल की। हालांकि उस चुनाव में खुद पुक्कर सिंह धार्मी अपनी सीटों पर चारों बार बनाने के बाद भी चुनौती साधित होने की ओर चुनाव आया। यहां तक कि इतिहास बन गया।

उत्तराखण्ड की जीत

उत्तरप्रदेश में कांग्रेस ने 1980 में बीजेपी सिंह के नेतृत्व में 425 में 309 सीटों पर सफलता हासिल की थी। 1985 के विधानसभा चुनाव में पार्टी को चुनाव में पार्टी नारायण दत्त तिवारी के नेतृत्व में 269 सीटें जीत कर लगातार देवबार सरकार बनाने में कामयाब रही थी। 1989 के विधानसभा चुनाव में उसने 403 सीटों पर चारों बार बनाने में कामयाब रही थी। उसके बाद लंबे समय तक वह सफलता कांग्रेस सहित कोई रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया। स्वयं कांग्रेस भी इस सफलता को कभी देवबार नहीं कर सकी। लेकिन मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व और पीएम नंदेंद मोदी की छाँकने के सहारे भाजपा ने इस रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया।

स्वयं कांग्रेस भी इस सफलता को कभी देवबार नहीं कर सकी। 1991 के विधानसभा चुनाव में जीत का रिकॉर्ड बनाने के बाद भी इस रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया। 1995 के विधानसभा चुनाव में उसने 403 सीटों पर चारों बार बनाने में कामयाब रही थी। उसके बाद लंबे समय तक वह सफलता कांग्रेस सहित कोई रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया। 1998 के विधानसभा चुनाव में उसने 403 सीटों पर चारों बार बनाने में कामयाब रही थी। 2002 के विधानसभा चुनाव में उसने 403 सीटों पर चारों बार बनाने में कामयाब रही थी। 2006 के विधानसभा चुनाव में उसने 403 सीटों पर चारों बार बनाने में कामयाब रही थी। 2010 के विधानसभा चुनाव में उसने 403 सीटों पर चारों बार बनाने में कामयाब रही थी। 2014 के विधानसभा चुनाव में उसने 403 सीटों पर चारों बार बनाने में कामयाब रही थी। 2018 के विधानसभा चुनाव में उसने 403 सीटों पर चारों बार बनाने में कामयाब रही थी। 2022 के विधानसभा चुनाव में उसने 403 सीटों पर चारों बार बनाने में कामयाब रही थी।

जगदीश बनारसी की जीत

जगदीश बनारसी की जीत

ज

संपादकीय

बायोडायर्सिटी पर अच्छी डील

सं युक्त राष्ट्र जैव विविधता सम्मेलन या कांप 15 में 196 देशों का इस बात पर जोड़ी होना सचमुच बड़ी बात है कि साल 2030 तक पृथ्वी के 30 फॉसदी हिस्से को प्रकृति के लिए संरक्षित कर दिया जाएगा। दुनिया भर में दो जो ही उन सभियों में सालाना 500 अरब डॉलर की कमी लायी जाएगी, जो पर्यावरण के लिहाज से नुकसानदार है और कम से कम 30 फॉसदी ऐसे इलाकों को पिंग से दूरस्त किया जाएगा, जिनका इकोसिस्टम खारब हो चुका है। इस समझौते से उत्तराहित कर्त्ता इसे जैव विविधता का 'पैरिस मैटें' बत रखे हैं। निश्चित रूप से बदलावमें जैव से कम बड़ा मुद्दा नहीं है जैव विविधता का। दोनों पर्यावरण के ही रहे नुकसान से संघर्ष तर पर जुड़े हैं। हालांकि यह समझौता होना जितना अहम है, उतना ही मुश्किल है इस पर अपल सुनिश्चित करना। उदाहरण के लिए, पृथ्वी के 30 फॉसदी हिस्से को संरक्षित करने की ही लिया जाए तो आज की तारीख में महज 17 फॉसदी हिस्सा ही प्रकृति के लिए संरक्षित है। अमले सात वर्षों में इस बदलाव 30 फॉसदी तक ले जाने के लिए विभिन्न संस्कारों को नीतियों और विकास परियोजनाओं के स्वरूप और उसकी गति के स्तर पर करें। ऐसे बदलाव करने पड़ेंगे, उनके लिए आसान तो बिलकुल नहीं है। इन बदलावों की अपनी अर्थकी कीमत भी है। इस लिहाज से एक बड़ी अंडाचन यह है कि सम्मेलन में भारत संसिद्ध विकास लौटाएं और राज्य विधानसभा भी एक साथ चुनाव करने से संरक्षित खाजाने और लोगों को भारी बचत होगी।

संयुक्त राष्ट्र जैव विविधता सम्मेलन या कांप 15 में 196 देशों के समझौते की एक अच्छी बात यह है कि सभी लक्ष्यों का स्वरूप दैवितक ही रहा गया है।

देशों की ओर से की जा रही नये फैंड की मांग रूप में पूरी नहीं हो सकी जैसी कि अपील की जा रही थी। समझौते के मुताबिक, फिलाल असुरक्षा राष्ट्र के मौजूदा बायोडायर्सिटी फैंड-इंसिंग फैंड की ही तरह कुछ रकम जुटाई जाएगी। अलग फैंड के मुद्दे पर अगले सम्मेलन में विचार किया जाएगा। मौजूदा विश्व की पर्यावरण चिंताओं का यह एक दिलचस्प पलूँ है कि अपार और विकसन देश कार्बन उत्सर्जन पर चिंता जताएं और पर्यावरण सुधारने में जो आगे रहें हैं लेकिन जब इसके लिए ठोस अर्थात् योगान करने की बात आर्थिक योगान करने में जो आगे रहती है तो आगे रहती है। तालमटोल की मुद्दा में जो आ जाते हैं। बहरहाल, इस समझौते की एक अच्छी बात यह है कि जिसे भारत के हस्तक्षेप का परिणाम बताया जा रहा है कि सभी लक्ष्यों का स्वरूप वैश्विक ही रखा गया है। विभिन्न देश अपनी परिस्थितियों, प्राथमिकताओं और क्षमताओं के अनुरूप उसे अपनाने और उस पर अपल करने के लिए स्वतंत्र होंगे। पहली नज़र में लग सकता है कि अलग-अलग देशों को काटा तय न होने के कारण इन पर अपल अपेक्षा से धीमी होगा, लोकन प्रतिबद्धताएं कागजी न रह जाएं, इसके लिए स्वतंत्र स्वतंत्र में यह लोचान जस्ती है। हालांकि इन सबके बावजूद समझौते के बाबत यह असमिया विवाद के लिए अस्तित्व बन रहा है कि जिसे भारत के हस्तक्षेप का परिणाम बताया जा रहा है और यही चीज भविष्य के लिए उम्मीद जागाती है।

1951-
52, 1957,
1962 और 1967
में लोकसभा और
सभी राज्य
विधानसभाओं के
चुनाव एक साथ
हुए थे।

कर देता है, जिससे लोगों के कल्याण के लिए किये जाने वाले सरकारी काम भी जारी होते हैं।

मोदी के इस विचार और आहान को सरकार के थिंक-टैक नीति आयोग ने एक सैद्धांतिक ढांचा भी दे दिया है। आयोग ने

समाज के लोगों ने पूर्व संसद

शैलेंद्र महातों की और उन्हें

आदिवासी विदेशी कानून दिया

समाज के लोगों ने पूर्व संसद

शैलेंद्र महातों की और उन्हें

आदिवासी विदेशी कानून दिया

आजाद सिपाही संवाददाता

भूमिज समाज के लोगों ने विशाल रैली निकाल पूर्व सांसद शैलेंद्र महतो के खिलाफ खोला मोर्चा, कहा

किसी भी हाल में पूर्वजों का नाम आजादी के आंदोलन से गायब करना बर्दाशत नहीं



उपायुक्त कार्यालय के समक्ष जुटे और प्रदर्शन कर उपायुक्त के माध्यम से राष्ट्रपति, राज्यपाल के विरोध मचाया। उठाने का कहा कि अज यह अंदोलन कम है, अगर किताब को बैंड नहीं किया जाता है तो विधानसभा धेराव के लिए मजबूर होंगे भूमिज पुत्र।

उधर बिहार से अलग होकर झारखंड राज्य का सपना साकार जरूर हुआ लेकिन झारखंडी आज भी अपन हक की लाइंड लड़ रहे हैं। किसी को खत्तियां आधारित स्थानीय नीति चाहिए, किसी को झारखंड की संरक्षित किया जाया।

समाज के लोगों ने पूर्व संसद

शैलेंद्र महातों के द्वारा लियी गई

किताब के प्रकाशन पर जमकर

रुक्खराम 10 हजार से ज्यादा ग्रामीण

रहा है। क्या आदिवासियों को इसका लाभ मिल रहा है। राज्य सरकार विधानसभा से बिल पास कर राज्यपाल और केंद्र सरकार के पाले में डाल दिये। जबकि राज्यपाल के विहार फैल धूल कांक रही है। नतीज लोग सड़क पर लड़ रहे हैं। हाल में खत्तियां आदोलन के लोग सड़क के बहुत छोटी हैं। नतीज लोग सड़क के नायकों के नायकों के साथ छेड़ाइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों द्वारा लियी गई दो पुस्तकों में चुआइ विद्रोह के नायक के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों द्वारा लियी गई दो पुस्तकों में चुआइ विद्रोह के नायक के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ महतों के नायकों के रूप में लिये गए चुआइ की जाएंगी तो आगे वाले समय में इसके गंभीर परिणाम भूगते होंगे।

मौके पर आक्रमण शैलेंद्र महतों के लिए साधारण विद्रोह के नायकों के रूप में रघुनाथ म

બડી કાર્વાઈ : ગુમલા નગર પરિષદ ને પાંચ દુકાનોનો કો સામાન સહિત કિયા સીલ

2008 સે નહીં દે રહે થે મારિક કિરાયા

નીલામ પત્ર વાટ દાયર કર
હોણી વસ્તુની, સીલ હુઈ
દુકાનોની કા નયે સેસે એ
હોણ આવેટન

આજાદ સિપાહી સંવાદદાતા

ગુમલા । બુધવાર કો પૂર્વ નિર્ધારિત યાંજના કે તહેત નગર પરિષદ કે દ્વારા બસ પડ્યા પ્રોટેક્ટ કો પાંચ દુકાનોનો કો સામાન સહિત સીલ કર
દિયા ગયા કાર્યપાલક પદાધિકારી સંયા કુમાર ને નિર્દેશ પર નગર પ્રબંધક હેલાલ અહમદ કી અભૂયાઈ મેં ચલે ઇસ સીલિંગ અધિયાન મેં જિન પાંચ દુકાનોની કો સીલ કરાયા ગયા વે મેહબત કરેશી, શિવ શંકર કુમાર, રિશુ કુમાર, જયપ્રકાશ શાહ તથા કૃષ્ણ કુમાર કે કબજે મેં થી । ઇન કબજા ધારિઓને ને 2008 કે બાદ સે અભી તક નગર પરિષદ કો માસિક કિરાયા



નહીં દિયા થા । ઇન સખી દુકાનદારોનો કો બાર-બાર લિખિત વ મૌખિક નોટિસ વ ચેતાવની દેને કે બાવજુદ ન તો યે લોગ દુકાન કા કિરાયા દે રહે થ થી ઔર ન હી દુકાન ખાલી કરને સીલ કરાયા ગયા વે મેહબત કરેશી, શિવ શંકર કુમાર, રિશુ કુમાર, જયપ્રકાશ શાહ તથા કૃષ્ણ કુમાર કે કબજે મેં થી । ઇન કબજા ધારિઓને ને 2008 કે બાદ સે અભી તક નગર પરિષદ કો માસિક કિરાયા

ગઈ ।

દુકાનોની કા નયે સેસે એ હોમા આવેટન : કાર્યપાલક પદાધિકારી ને બતાયા કિ જિન દુકાનોની કો સીલ કિયા ગયા હૈ તુંના રાશિ દુકાનની કો ઉપરાં દુકાનોની કો સીલ ખોલને, સામાન નિકળને તથા દુકાની ખાલી કરને કો કાર્વાઈ કી જાણી, સાથ હી ખાલી હુંદું કરું અનુભંડલ સુધીની પુલિસ કો ઇન પાંચોની કો સીલ કરું કર દિયા ગયા ।

કાર્યપાલક પદાધિકારી સંયા કુમાર ને લિખિત આદેશ કે બાદ મિઝસ્ટેટ એવં પુલિસ કો મૌજૂદી મેં ઉક સીલિંગ કો કાર્વાઈ કી હુંદું થી । ઇન કબજા ધારિઓને ને 2008 કે બાદ સે અભી તક નગર પરિષદ કો માસિક કિરાયા

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોને ન તો રાશિ જમા કી ઔર ન દુકાન ખાલી કી : સંયા કુમાર

કાર્યપાલક પદાધિકારી સંયા કુમાર ને બતાયા કિ એટલે દિનોં બસ પડાવ કેની 40 દુકાનદારોની નોટિસ દેકર તુંને સીલ કરું કો ચેતાવની કી ગઈ થી એટલે પર 28 દુકાનદારોને તે તેતિ પદ્ધત કરે હું અણી રાશિ જમા કરી દી થી । તીવં દિન ફાલે શેષ દુકાનોની કો સીલ કરું કો આદેશ જારી હોય કે બાદ સાત અન્ય બકાદાર મી અનન્દ-પાનન મેં જાણી જમા કર ગય । કિનું ઉપરોક્ત પાંચ દુકાનોની કો કબજા ધારી લોગોની ને ન તો રાશિ જમા કી ઔર ન હી દુકાનોની ખાલી કી । ઇસ પર બુધવાર કો સીલિંગ કો કાર્વાઈ કી ગઈ ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોની કો સીલ કરું કો બાવજુદ ન હોય ।

નોટિસ કે બાદ ભી પાંચ દુકાનદારોન

